

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

३२९

—*—

श्रीभास्कररायमखिना प्रणीतम्
वरिवस्यारहस्यम्

भास्कररायप्रणीत-प्रकाश-संस्कृतव्याख्यया
सरोजिनी-हिन्दी-व्याख्यया च संवलितम्

हिन्दी व्याख्याकार

डा० श्यामाकान्त द्विवेदी 'आनन्द'

एम.ए., एम.एड., पी-एच्.डी., डी.लिट्



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

विषयानुक्रमणिका

दो शब्द
प्राक्कथन

पृ० सं०
५-९
११-८४

उपोद्घात

१. भास्करराय और उनका आर्विभाव काल	१२
२. भास्करराय की रचनाएँ	१४
३. भास्करराय का जीवन-परिचय	१५
४. भास्करराय की दार्शनिक दृष्टि	२१
५. 'वरिवस्यारहस्यम्'—एक विहंगमावलोकन	२६

प्रथमोऽंशः

विषय	श्लो०	पृ० सं०
ग्रन्थकार का भगवान् नृसिंह से उनकी भक्ति-प्राप्ति हेतु निवेदन	१	१
ग्रन्थकार का विद्योपासक विद्वत्समाज के प्रति आत्मनिवेदन	२	२
प्रकाशस्वरूप परमशिव की महत्ता	३	३
विमर्श शक्ति और उसकी महत्ता	४	११
'परिणामवाद' एवं चतुर्विधा सृष्टि	५	२८
विमर्श शक्ति के परिज्ञान के उपाय	६	६६
गायत्री के दो रूप	७	७०
श्रीविद्या की गोपनीयता	८	७६
कूटत्रय का स्वरूप	९-११	८०
हल्लेखा का स्वरूप	१२	८९
नाद और उसका स्वरूप	१३	८९

कूटत्रय में वर्ण संख्या	१४	१२२
'कामकला', 'त्रिकोण' एवं 'हल्लेखा' का उच्चारणकाल	१५-१६	१२३
नाद, वाग्भवकूट, कामराजकूट एवं शक्तिकूट का मात्रा-काल	१७-१८	१३७
मन्त्राक्षरों के उच्चारण-स्थान	१९	१३८
प्रथम कूट एवं द्वितीय का स्वरूप	२०-२१	१४०
नाद एवं बिन्दु का स्वरूप	२२	१४७
अर्द्धचन्द्र एवं रोधिनी का स्वरूप	२३	१४७
नाद, नादान्त, शक्ति, व्यापिका, समना एवं उन्मना का स्वरूप	२४-२७	१४७
नादोच्चारण की प्रक्रिया	२८-३०	१४७
कूटत्रय का उच्चारण-काल	३१	१६४
कूटत्रय में बीज चतुष्टय	३२	१६५
बीज चतुष्टय	३३-३४	१६५
ब्रह्मादिक देवत्रय एवं उनकी शक्तियों की मन्त्राक्षररूपता	३५-३६	१६८
जागृतावस्था और रेफस्थ प्रकाश के अंतर्संबंध का प्रतिपादन	३७	१८०
स्वप्नावस्था एवं मन्त्राक्षर 'ई' में स्थित प्रकाश के अंतर्संबंध का विवेचन	३८	१८१
सुषुप्ति का स्वरूप	३९	१८२
तुरीयावस्था का स्वरूप	४०	१८२
तुर्यातीतावस्था का स्वरूप	४१	१८५
बिन्दु एवं पञ्चशून्य-अन्तर्संबंध	४२	१८६
महाशून्य की भावना एवं 'प्राणविषुव' का स्वरूप	४३	१८६
'मन्त्रविषुव' का स्वरूप	४४	१९०
नाडिकाविषुव' का स्वरूप	४५-४६	१९२
प्रशान्तविषुव' का स्वरूप	४७	१९९
'शक्तिविषुव' एवं 'कालविषुव' का स्वस्वरूप	४८	२००

'तत्त्वविषुव' का स्वरूप	४९-५१	२०३
जप का लक्षण	५२	२०४
ग्रन्थ के पूर्वांश की समाप्ति की अनुज्ञप्ति	५३	२२०

द्वितीयोऽंशः

अर्थ-ज्ञान-शून्य अनुष्ठित जप की व्यर्थता	५४-५५	२२२
मन्त्रार्थों का परिज्ञान आवश्यक क्यों?	५६	२२३
अर्थों के विभिन्न भेद	५७-५९	२२५
गायत्री मन्त्र एवं पञ्चदशी मन्त्र के मन्त्राक्षरो के अर्थ में साम्य का प्रतिपादन	६०	२२९
गायत्री मन्त्र एवं पञ्चदशीमन्त्र के वर्णों की परस्पर वाचकता	६१	२३६
पञ्चदशी एवं गायत्री मन्त्र के वर्णों का अन्तर्संबन्ध	६२	२३९
कूटद्वय के शेष अक्षरों के उद्धार की प्रक्रिया एवं गायत्री विद्या की अर्थ-पद्धति	६३	२४१
युगलत्रय, कूटत्रय एवं ईकारत्रय—एक विवेचन	६४-६५	२४१
मिथुनत्रय एवं कूटत्रय में अंतर्संबंध	६६	२४६
पञ्चदशाक्षरी विद्या का स्वस्वरूप	६७	२४८
परात्परशक्ति का सप्त शक्तियों एवं छत्तीस तत्त्वों से तादात्म्यभाव	६८	२४८
अकार एवं हकार की ब्रह्मरूपता	६९	२५४
सिसृक्षुब्रह्म की सृजन-प्रक्रिया	७०	२५४
'विसर्ग', 'काम' एवं 'रति' का स्वरूप	७१	२५५
शाब्दीसृष्टि एवं आर्थी सृष्टि का मूल कारण	७२	२५५
'भावार्थ' का स्वरूप	७३	२५५
ह क र स ल—वर्ण तथा इनका पञ्चभूतों से सम्बन्ध एवं संप्रदायार्थ	७४	२६४
वर्णों द्वारा गुणोत्पत्ति एवं कामकला द्वारा स्पर्शोत्पत्ति का प्रतिपादन	७५	२६८

वर्ण एवं उनके अर्थ में तादाम्यभाव	७६	२७०
ककारत्रय एवं 'सकल', 'प्रलयाकला तथा 'विज्ञानाकल' की अभेदात्मकता	७७	२७२
अकार एवं जीवों में अभेदात्मकता तथा एकार का विद्यागत महत्त्व	७८	२७३
बिन्दुत्रय के साथ रुद्र, ईश्वर तथा सदाशिव की अभेदात्मकता तथा शान्ति, शक्ति एवं शम्भु की नाद के साथ अभेदात्मकता	७९	२७५
महाविद्या एवं सैतिस तत्त्वों में अभेदात्मकता का प्रतिपादन	८०	२७६
सम्प्रदायार्थ का स्वरूप	८१	२८०
'निगर्भार्थ' का स्वरूप	८२	२८२
देवी की गणेशरूपता	८३	२८३
देवी की ग्रहरूपता का प्रतिपादन	८४	२८४
देवी की नक्षत्र-रूपता का प्रतिपादन	८५	२८५
देवी की योगिनीरूपता	८६	२८६
देवी की प्राण, जीव एवं राशि के साथ तदात्मकता	८७	२८८
श्रीविद्या की कूटत्रयात्मकता एवं वाक्चतुष्टयात्मकता	८८	२८९
श्रीविद्या की ग्रहरूपात्मकता एवं नक्षत्ररूपात्मकता	८९	२९०
श्रीविद्या की योगिनीरूपात्मकता एवं राशिरूपात्मकता	९०	२९२
पंचदशी विद्या एवं देवी में अभेदात्मकता	९१	२९४
श्रीचक्र की ग्रहरूपात्मकता	९२	२९६
श्रीचक्र की नक्षत्ररूपता	९३	२९८
श्रीचक्र की योगिनीरूपात्मकता	९४	२९८
श्रीचक्र की राशिरूपता का प्रतिपादन	९५	३००
पंचदशीविद्या के वर्णों के साथ चक्रों की एवं चक्रों के साथ देवी की अभिन्नता का प्रतिपादन	९६	३०१
वर्णमाला एवं पीठों में समानता	९७	३०७
गणप, ग्रह, म आदि के साथ पंचपन पीठों की एकात्मता	९८	३०८

विद्याक्षरों द्वारा चक्रोत्पत्ति-प्रक्रिया	९९-१००	३१०
'गुरु' की देवी, विद्या, एवं चक्र के साथ अभिन्नता एवं गणेश के साथ अभेदात्मकता का प्रतिपादन	१०१	३१२
'कौलिकार्य' का स्वरूप	१०२	३१४
कुलकुण्डलिनी का स्वरूप एवं मूलस्थान	१०३-१०६	३१६
कुलकुण्डलिनी एवं श्रीविद्या का रहस्यार्थ	१०७	३२४
श्रीविद्या के 'महातत्त्वार्थ' का स्वरूप	१०८-१०९	३४३
'नामार्थ' एवं 'शब्दरूपार्थ' का स्वरूप	११०	३४४
देवी के नाम एवं मन्त्राक्षर	१११-११२	३४७
शक्तिसमूहार्थ का स्वरूप	११५	३५१
प्रथमकूट के छः वर्णों, तीन दम्पतियों एवं कामकला में अभिन्नता का प्रतिपादन	११६	३५४
शाक्तार्थ का स्वरूप	११७-११८	३५७
श्रीविद्या के सामरस्यार्थ का स्वरूप	११९	३५८
सामरस्यार्थ का स्वरूप	१२०	३६०
'ककार' एवं 'एकार' का अर्थ	१२१	३६१
मन्त्राक्षर 'क' 'ए' एवं 'ई' का अर्थ	१२२	३६३
लहरी, ह, क, ई, स, म कूटग्रय एवं ह्रीं आदि का रहस्यार्थ	१२३-१३०	३६४
सिद्धों द्वारा स्थापित मन्त्रार्थों की व्याकरण द्वारा पुष्टि की अनिवार्यता का प्रतिपादन	१३१-१३२	३६६
मन्त्र के 'समस्तार्थ' के स्वरूप का विवेचन	१३३	३६७
सगुणार्थ का स्वरूप	१३४-१३६	३६८
ह स क ह ल का अर्थ	१३७-१३९	३७०
तृतीयकूट एवं सगुणार्थ के स्वरूप का विवेचन	१४०	३७१
मन्त्रगत 'ककार', 'एकार' एवं 'अकार' की विदेशों से तदात्मता का प्रतिपादन	१४१	३७१
पंचदशी मन्त्रगत 'ह स क ह ल' के अर्थ का विवेचन	१४३	३७३
तृतीयकूट द्वारा जीवब्रह्मैक्य की स्थापना का प्रतिपादन	१४४	३७३

मन्त्रगत 'स क ल' पद का अर्थ	१४५	३७३
'स' 'क' 'ल'—मन्त्राक्षर का अर्थ	१४६	३७३
मन्त्रार्थ विषयक सर्वमान्यता का प्रतिपादन	१४८	३८०
भावार्थादिक अर्थ-प्रकारों का महत्त्व	१४९	३८१
मन्त्र के अर्थ के निर्णय के विषय में भगवान् शिव के वचनों की निर्णायक भूमिका का प्रतिपादन	१५०	३८२
शब्द के अर्थग्रह में ईश्वरेच्छा की भूमिका	१५१	३८२
वर्ण एवं उनके अर्थ का अन्तर्संबंध	१५२	३८२
अनेकार्थी शब्दों से विशेषार्थ-ग्रहण के कारक तत्त्व	१५३	३८३
मन्त्रार्थ की दिशा में विशेषक की अपेक्षा सर्वबोध का प्रतिपादन	१५४	३८४
मन्त्र एवं वाक्य अन्तर्संबंध	१५५	३८५
मन्त्र-विनियोग की दो दिशाएँ	१५६	३८६
'निगमन' के प्रमाणार्थ मुख्योपाय	१५७	३८६
अलौकिक अपूर्व प्रयोजन	१५८	३८७
श्रीविद्या की उपासना के आन्तरिक अङ्ग	१५९	३८८
श्रीविद्या के बाह्य अङ्गों का विवेचन	१६०-१६१	३८८
श्रीविद्या की उपासना में आन्तरिक अङ्ग की प्रधानता	१६२	३९४
बाह्याडम्बरोपासना का खण्डन	१६३	३९६
कामकला बीज से मूलमन्त्र एवं मूलमन्त्र से शरीर के बाह्य एवं आन्तरिक विकास का विवेचन	१६४	३९९
'श्रीविद्या' की गुरु-परम्परा से प्राप्ति की अनिवार्यता	१६५	४०१
गुरु-चरणों की वन्दना	१६६	४०२
प्रस्तुत ग्रन्थ-प्रणयन के पीछे गुरु-कृपा का प्रतिपादन	१६७	४११
श्लोकार्थानुक्रमणिका		४१५-४२१